नाम - शिवम रंजन
कोर्स - हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार
रोल न. - ९१५
विषय - मुद्रित माध्यमों की पृष्ट सज्जा
शोध कार्य - किसी एक समाचार पत्र ब पत्रिका का तुलनात्मक अध्ययन

परिचय

समाचार पत्र संक्षिप्त लेखों के एक नियमित रूप से प्रकाशित संग्रह के रूप में परिभाषित किया गया है जो वर्तमान घटनाओं और हितों पर अपडेट प्रदान करता है। जबकि पत्रिका लेखों के एक नियमित रूप से प्रकाशित संग्रह के रूप में परिभाषित किया गया है जो एक विशिष्ट समूह के लिए रुचि के विषयों पर ध्यान केंद्रित करता है, जैसे कि खेल के प्रशंसक या संगीत प्रशंसक या घर के सज्जाकार। हालाकि एक 'अखबार' और 'पत्रिका' के बीच का अंतर उनकी उपस्थिति, आकार, पठनीयता, सामग्री और दर्शकों पर आधारित होता है। एक मुख्य अंतर यह है कि मासिक आधार पर पत्रिकाएं उपलब्ध हैं, और समाचार पत्र दैनिक आधार पर उपलब्ध हैं।अब, उनकी उपस्थिति से, यह स्पष्ट है कि समाचार पत्र आकार में पत्रिकाओं से बड़े हैं। आम तौर पर, पत्रिकाओं में एक "पुस्तक-प्रकार" आकार होता है, जबकि समाचार पत्रों को वास्तव में अपनी पूरी सामग्री को समझने के लिए पाठक द्वारा हथियारों की लंबाई में फैलाना होता है। समाचार पत्र की तुलना में पत्रिकाएं अधिक रंगीन हैं, क्योंकि रंग पत्रिका को एक निश्चित जीवन देते हैं, जबकि एक अखबार पर चित्रों की अनुपस्थिति इसकी "कोई बकवास" आभा नहीं लाती है।

दैनिक जागरण : एक परिचय

दैनिक जागरण को 1942 में शुरू किया गया था। इसका श्रेय आक्रामक स्वतन्त्रता सेनानी श्री पूर्णचन्द्र गुप्त को जाता है। 1942 का वर्ष भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का बहुत महत्वपूर्ण वर्ष था जब भारत में अंग्रेज़ों की दासता से मुक्त होने के लिए संघर्ष अपने चरम पर था। भारत छोड़ो आंदोलन इस संघर्ष का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। ऐसे निर्णायक मोड़ पर दैनिक जागरण को इसके संस्थापक स्वर्गीय पूर्णचन्द्र गुप्त द्वारा जारी किया गया। इस दृष्टि के साथ कि अखबार जन-समूह के मुक्त स्वर को प्रतिबिम्बित कर सके। प्रथम संस्करण 1942 में झांसी से जारी किया गया। 1947 में इसका मुख्यालय झाँसी से कानपुर ले जाया गया। पूर्णचन्द्र गुप्त कभी भी अपने समाचारपत्र को संभ्रान्त बनाने की अपनी इच्छाशक्ति से नहीं डिगे।

राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

जुलाई तक 25 करोड़ लोगों को मिल जाएगी कोरोना की वैक्सीन

नीतीश के नेतृत्व में चुनाव नहीं लड़ेगी लोजपा

कांग्रेस की सरकार बनने पर रद करेंगे नए कृषि कानून : राहुल

हाथरस कांड के बहाने योगी को बदनाम करने की साजिश

सर्दियों की शुरुआत के साथ गहराने लगा प्रदूषण

बंगाल के पिनकॉन ग्रुप पोंजी घोटाले में आठ को उम्र कैद

इंडिया टुडे :एक परिचय

इंडिया टुडे एक भारतीय पत्रिका है। यह पत्रिका अंग्रेज़ी ओर हिंदी दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती है।इंडिया टुडे की स्थापना 1975 में विद्या विलास पुरी (थॉम्पसन प्रेस के मालिक) द्वारा की गई थी, उसकी बेटी मधु त्रेहान के साथ उसके संपादक और उसके बेटे आरोन पुरी के प्रकाशक के रूप में। वर्तमान में, इंडिया टुडे हिंदी , तमिल , मलयालम और तेलुगु में भी प्रकाशित होता है ।

कार्यप्रणाली : इस शोध कार्य में दैनिक जागरण समाचार पत्र (४/१०/२० से १०/१०/२०) तथा इंडिया टुडे पत्रिका (१४/१०/२०) का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

<u>कागज सामग्री :</u>

दैनिक जागरण समाचार पत्र आमतौर पर या तो पुनर्नवीनीकरण कागज या लकड़ी के लुगदी से बने होते हैं। यह कम गुणवत्ता वाला कागज है। विभिन्न प्रकार के समाचार प्रिंट का उपयोग इसी उद्देश्य को देखते हुए किया जाता है। दैनिक जागरण समाचार पत्र खराब गुणवत्ता वाली स्याही के साथ पतले, कम गुणवत्ता वाले सफेद या भूरे रंग के कागज पर मुद्रित किए जाते हैं ताकि उन्हें बहुत सस्ती दरों पर जनता को बेचा जा सके, जिससे हर कोई इसे खरीद सके। इसमें कई पृष्ठ होते हैं, जो बड़े होते हैं, जो विभिन्न श्रेणियों की जानकारी के लिए स्थान प्रदान करते हैं। जबकि इंडिया टुडे पत्रिका उच्च गुणवत्ता वाले चमकदार कागज पर मुद्रित की जाती है क्योंकि गुणवत्ता और समृद्धि पर ध्यान दिया जाता है। सामग्री रंगीन है, एक अखबार के विपरीत, और लेआउट जटिल और स्टाइलिश है क्योंकि सौंदर्यशास्त्र एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाचार पत्र आम तौर पर काले और सफेद मुद्रित होते हैं जबकि पत्रिकाएं रंगीन होती हैं।

<u>लेख:</u>

दैनिक जागरण समाचार पत्र में विभिन्न खंड होते हैं जिनमें व्यावसायिक समाचार, खेल समाचार, वैश्विक और स्थानीय समाचार शामिल होते हैं। इसमें मौसम के पूर्वानुमान और हाल के नोटिस और निविदाओं के साथ-साथ क्रॉसवर्ड पज़ल्स, ऑबिट्यूरी और संपादकीय कार्टून भी शामिल हैं। सप्लीमेंट्री पेपर भी हैं जो साप्ताहिक प्रिंट करते हैं और अतिरिक्त खंड होते हैं। समाचार पत्रों में विज्ञापन भी प्रस्तुत किए जाते हैं लेकिन संख्या में बहुत सीमित

होते हैं। सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण खबर आम तौर पर फ्रंट पेज पर अपना रास्ता बनाती है जबकि इंडिया टुडे पत्रिका में लेख, साक्षात्कार, विज्ञापन आदि के रूप में विषय-विशिष्ट जानकारी की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। यह पत्रिका फैशन, खेल, कार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, वित्त, आदि जैसे विभिन्न विषयों के लिए विशिष्ट है।जैसे कि पत्रिका में बिहार चुनाव को लेकर १७ बे पृष्ट पर विस्तार से वर्णन किया गया है जबकि समाचार पत्र में प्रथम पृष्ट पर ४ कॉलम में एक रिपोर्ट लिख दी गई है। ऐसे ही चीन के मुद्दे और अटल टनल को एक साथ पत्रिका में वर्णन किया गया है जबकि समाचार पत्र में दोनो का अलग अलग पृष्ट तथा विभिन्न कॉलमो में वर्णन किया गया है।दैनिक जागरण में सामान्य तौर पर अपराध, राजनीति, व्यापार, खेल और मनोरंजन के बारे में समाचार होते हैं जबकि इंडिया टुडे में सेलिब्रिटी गपशप, मनोरंजन समाचार, कहानियां, राजनीति और रोमांच शामिल हैं।

भाषा:

दैनिक जागरण समाचार पत्र का लेआउट और शैली बहुत ही सरल और सामान्य है और इस्तेमाल की जाने वाली भाषा औपचारिक और उद्देश्यपूर्ण है। सामग्री केवल-बिंदु है और केवल आवश्यक जानकारी शामिल है ताकि सभी समाचारों को पृष्ठों पर समायोजित किया जा सके। इसके विपरित इंडिया टुडे पत्रिका की भाषा आवश्यक रूप से औपचारिक प्रस्तुति के नियम का पालन नहीं करती है और इसकी समृद्धि और riveting प्रकृति पर मूल्यवान है। साहित्यिक शैली ऐसी है जिसका उद्देश्य पाठक को आकर्षित करना है। जैसे कि पत्रिका में हेडलाइन "राज्यो का हक मारा" जैसे शीर्षक का इस्तेमाल किया गया है जबकि ७/१०/२० के दैनिक जागरण में बिजनेस (१० बा पृष्ट) में "जीएसटी छतीपुरती पर नहीं होगी काउंसिल की मीटिंग" जैसे शीर्षक का प्रयोग किया गया है। पत्रिका की भाषा पाठक वर्ग को पूरा लेख पढ़ने को आकर्षित कर रहा है जबकि समाचार पत्र में पाठक शीर्षक पढ़ कर भी समझ सकता है।

विज्ञापन:

इंडिया टुडे पत्रिका में बहुत सारे विज्ञापन होते हैं, मुख्य रूप से विषय-विशेष, जो एक मनोरंजक तरीके से प्रस्तुत किए जाते हैं। यह पत्रिका आम तौर पर एक सदस्यता के आधार पर प्रदान की जाती है, लेकिन न्यूज़स्टैंड और स्टोर पर भी और तुलनात्मक रूप से महंगा है।
दैनिक जागरण समाचारपत्र आम तौर पर स्थानीय व्यवसाय के लिए अधिक किफायती विकल्प होते हैं। इसमें छोटे छोटे विज्ञापन तथा बड़े विज्ञापन होते है। बड़े विज्ञापन मुख्यत प्रथम पृष्ठ पर होता है। इंडिया टुडे पत्रिका में विज्ञापन की लागत संचलन, पाठक और विषय के आधार पर बहुत भिन्न होती है, लेकिन वे आम तौर पर अखबार के विज्ञापनों की तुलना में बहुत अधिक होती हैं। एक पत्रिका में सीमित रंग और सुविधाओं के साथ एक छोटा सा विज्ञापन कहीं भी कई सौ से लेकर कई लाख तक खर्च कर सकता है। पूर्ण रंग और चमकदार फिनिश वाले बड़े विज्ञापन काफी महंगे हो सकते हैं, हालांकि दृश्य प्रभाव अखबार के विज्ञापनों की तुलना में बहुत अधिक है।

शैली:

दैनिक जागरण समाचारपत्र एक सरल और औपचारिक लेआउट का पालन करते हैं। इसके विपरीत, पत्रिकाओं को एक विशिष्ट पाठक पर लक्षित किया जाता है और, इसलिए, एक मनोरंजक लेआउट एक पत्रिका का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इंडिया टुडे पत्रिका लेआउट में कई महत्वपूर्ण तत्व हैं, जैसे हेडलाइन, इमेज, इमेज कैप्शन, रनिंग हेड, बाइलाइन, सबहेड, बॉडी कॉपी इत्यादि।
दैनिक जागरण समाचार पत्र में सरल डिज़ाइन और लेआउट होते हैं, और सामग्री आमतौर पर काले और सफेद रंग में होती है। हालांकि, इंडिया टुडे पत्रिका डिजाइन में जटिल है। यह अख़बारों की तुलना में पत्रिकाओं की उपस्थिति को अधिक आकर्षक बनाता है, विभिन्न प्रकार के रंगों और फोंट का उपयोग करता है। अखबार की तुलना में यह पत्रिका अधिक महंगी भी है। दैनिक जागरण ८ कॉलम का समाचार पत्र है इसलिए खबर को उसी हिसाब से लिखा

जाता है जबकि इंडिया टुडे पत्रिका में ऐसा कोई बंधन नहीं है। इंडिया टुडे पत्रिका में आमतौर पर समाचार पत्रों की तुलना में एक अलग शैली में लिखी जाने वाली कहानियाँ होती हैं; लेखन अधिक सार्वभौमिक होता है और दैनिक जागरण की तुलना में कम समय का तत्व होगा; इसमें और भी विशेषण हो सकते हैं; हालांकि पत्रिका-शैली की कहानियां अखबार में दिखाई दे सकती हैं।

निष्कर्ष:

दैनिक जागरण समाचारपत्र और इंडिया टुडे पत्रिका दोनो ही मुद्रित रूप में हाल की जानकारी के स्रोत हैं और समाज द्वारा पूरी तरह से स्वीकार किए जाते हैं। उनमें से प्रत्येक जानकारी को अलग तरह से प्रस्तुत करता है। जबकि समाचार पत्र सभी क्षेत्रों और स्थानों से समाचार और हाल के मुद्दों को कवर करता है, पत्रिकाएं एक विशिष्ट विषय का पालन करती हैं।वे दोनों कागज और स्याही की गुणवत्ता, सामग्री की भाषा और प्रकाशन की आवृत्ति में भी भिन्न होते हैं। हालांकि, समाचार पत्र और पत्रिकाएं दोनों ही समाज में मूल्यवान सूचनाओं के प्रसार के लिए जिम्मेदार हैं।
यद्यपि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया बाजार पर कब्जा कर रहा है, समाचार पत्र और पत्रिकाएं अभी भी सूचना का सबसे भरोसेमंद रूप हैं।